Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

# प्रयोगवादी चित्रकार प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल

डॉ.संतोष बिंद
प्रवक्ता, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज,
हुसैनगंज, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश,भारत।

**सारांश–** 'राम चन्द्र शुक्ल की कला की प्रमुख विशेषता यह है कि उनके किन्हीं दो चित्रों में विचारधारा शैली, विषयवस्तु या रंग का मिश्रण का साम्य नहीं दिखाई पड़ता प्रत्येक चित्र अपने में एक नयी प्रेरणा, एक नया सन्देश, नया जीवन लेकर सामने आता है, यदि यह कहा जाए कि उनके केवल एक चित्र के पूर्ण अध्ययन एवं मनन से सहज ही किसी कला के विद्यार्थी को इतनी अधिक प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिल सकता है।

मुख्यशब्द– प्रयोगवादी, चित्रकार, रामचन्द्र शुक्ल,हिन्दी,शैली,विचारधारा।

''मैं हर समय यही कामना करता हूँ कि मेरी स्थित एक नीरव शान्त झील सी हो। जिस क्षण इस गति को मैं प्राप्त करता हूँ, मेरे अन्तर में संग्रहीत अनुभूतियों की कोई कंकड़ी या पत्थर उछलकर झील के मध्य एकाएक गिर पड़ती है और फिर वृत के बाद वृत बनते जाते हैं। यह स्पन्दन मेरे शरीर के पोरो से होता हुआ मेरी उँगलियों में केन्द्रित हो जाता है और अनायास मैं तूलिका उठा लेता हूँ। यही स्पन्दन रेखा, रंग, आकारों के रूप में प्रवाहित हो साकार हो जाती है चित्र के रूप में। तब मेरी तूलिका मेरे हाथों से छूट जाती है। मैं फिर अनुभूतियों के मैदान में निरीह केचुवे सा रेंगने लगता हूँ। यही वह अवधि है जब में रचना करता हूँ।''[1] – प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल

प्रो0 राम चन्द्र शुक्ल ऐसा व्यक्तित्व हैं जिनका लेखनी, वाणी तथा तूलिका तीनों पर ही समान अधिकार है। भारतीय कला को नवीन दिशा प्रदान करने हेतु नये विचारों के साथ अपने लेखों व चित्रों के माध्यम से सदैव प्रयासरत रहे। पाश्चात्य कला की नकल का विरोध करते हुए भारतीय कला में मौलिकता पर विशेष बल दिया। कला के क्षेत्र में अनेकों सफल प्रयोग भी किए।

''मैं कला को जीवन की उपलब्धि मानता हूँ। कला एक खोज है इसी खोज में मेरी कला निरन्तर प्रगति करती रही है। मेरी कला ने अनेक पहलू और रूप बदले तथा अनेक शैलियों और विद्याओं में उद्धृत हुई। एक ही रट में बढ़ते जाना मैंने सीखा ही नहीं।''[2] –प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल

प्रो0 शुक्ल का जन्म 1 मार्च 1925 में बस्ति जिले के हरैया तहसील के एक छोटे से ग्राम शुक्लपुरा के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पिता पं0 रामाधार शुक्ल संस्कृत के एक प्रतिष्ठित पण्डित थे। नौकरी की तलाश में बस्ती छोड़कर इलाहाबाद आए और यहीं पर स्थायी रूप से बस गए। शुक्ल जी की प्रारम्भिक शिक्षा इलाहाबाद में ही सम्पन्न हुई।,

'बाल्यकाल से ही इन्हीं से अभिरूचि रही है। यद्यपि सामाजिक वातावरण तथा पारिवारिक वातावरण इनके बिल्कुल अनुकूल न था। इस परिवार के इतिहास में शायद ही कभी चित्र विद्या का समागम रहा हो, अधिकतर खेती बारी का साधन ही इस परिवार का मुख्य उद्योग रहा है वैसे विद्या पठन–पाठन का कार्य तो ब्राह्मण परिवार का प्राचीन धर्म ही रहा है परन्तु ग्रामीण परिवार के इस कुटुम्ब में कला की ओर इस प्रकार की प्रतिभा विलक्षण ही जान पड़ती है।''[3] इनके पिता की हार्दिक इच्छा थी कि उनका ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र एक प्रशासनिक अधिकारी बने, परन्तु उनको तो चित्रकार बनना था। हाईस्कूल की परीक्षा, कला में विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अपने विद्यार्थी जीवन में ही शुक्ल जी ने अपनी कला से वहाँ के अध्यापकों, छात्रों तथा नगरवासियों को प्रभावित किया और निरन्तर कलापथ पर अग्रसर रहे।

बाल्यकाल में पत्र–पत्रिकाओं में छपे चित्रों की अनुकृति कर प्रतिदिन चित्र बनाया करते। इण्टरमीडिएट के पश्चात् प्रयाग विश्वविद्यालय में बी0ए0 में प्रवेश लिया, सौभाग्यवंश यहाँ कुलपति पं0 अमरनाथ झा के सहयोग से कला कक्षाएँ प्रारम्भ की गई। जिसका निर्देशन स्वर्गीय क्षितीन्द्रनाथ म
जूमदार ने किया।

श्री मजूमदार असित कुमार हलदार के सहपाठी थे और आचार्य अवनीन्द्र नाथ ठाकुर के प्रिय शिष्यों में से थे। ये सभी समकालीन कला धारा में विशेष एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। रामचन्द्र शुक्ल जी आचार्य क्षितीन्द्र नाथ मजूमदार के प्रिय शिष्य बन गये। श्री मजूमदार विख्यात चित्रकार होते हुए भी साधु प्रकृति के व्यक्ति थे। वे अपने किसी भी शिष्य को हतोत्साहित नहीं करते थे। उनके शिष्य स्वतन्त्र होकर अपना विषय चुनते थे। रामचन्द्र शुक्ल ने यहाँ तीन वर्षों तक शिक्षा ग्रहण की और वाश शैली में कुशलता प्राप्त की। किन्तु रेखांकन और विषयवस्तु के चयन में स्वतंत्र रहे। 'तीन साल तक गुरूचरणों में रहकर शुक्ल जी ने जो कुछ पाया उनका सर्वप्रथम चित्रित रूप था 'मालिन' नामक चित्र। वह चित्र अत्यधिक प्रशंसित हुआ। बाद में सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं कला मर्मज्ञ श्री अमरनाथ झा ने उस चित्र को व्यक्तिगत संग्रह के लिए रख लिया।'[4]

इसके अतिरिक्त चित्रकार सुखवीर सिंह सिंघल जो लखनऊ आर्ट कॉलेज के प्राचार्य, प्रसिद्ध चित्रकार स्वर्गीय असित कुमार हल्दर के शिष्य थे, के प्राइवेट चित्रकला शिक्षा केन्द्र (दरभंगा कालोनी, लाउदर रोड) में संध्याकालीन कक्षाओं में वाश पद्धति सीखी। परन्तु वाश चित्रण के धुधले पारदर्शक रंग शुक्ल जी को अधिक प्रभवित नहीं कर सके।

रामचन्द्र शुक्ल इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक के दौरान थियेटर में भी रूचि लेने लगे। रंगमंच से जुड़ाव तथा मंच निर्माण में अभिरूचि में इन्हें पेन्टिग में डेप्थ समझने में भी मदद की। नगर में अनेक नाटकों में अभिनय तथा निर्देशन किया। 1943 में अमर वर्मा और रंगकर्मी अमरेश चन्द्र बनर्जी के साथ नाट्य संस्था 'आदर्श कला मन्दिर' भी बनाया।

उसी समय चलचित्र के प्रति आकृष्ट हुए और बी0ए0 की परीक्षा समाप्त होते ही 1946 में सिनेमा में कार्य करने मुम्बई चले गये। फिल्म निर्देशन भी किया। 'महात्मा गांधी पर आधारित फिल्म 'सेवाग्राम' और 'भाईदूज' में कला निर्देशन और अभिनय भी किया।'[5] परन्तु वहाँ स्वभाव के विपरीत वातावरण के कारण मन न लगने पर पुनः प्रयाग वापस लौटे और आगे शिक्षा ग्रहण की। प्रो0 राम चन्द्र शुक्ल 1948 में चित्रकला अध्यापक के पद पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में नियुक्त हुए। बाद में ललित कला महाविद्यालय में अध्यक्ष पद पर कार्य किया। 36 वर्षों तक चित्रकला का अध्यापन किया। वर्षों जमकर पाश्चात्य आधुनिक प्रवृत्तियों का अध्ययन किया। अनेक लेख लिखे, पुस्तकें लिखी और स्वयं भी चित्रकला में नवीन प्रयोग किये।

प्रो0 शुक्ल के कला विषय में लगभग 1000 से भी ज्यादा लेख पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए है। नवनीत, वासन्ती, त्रिपथगा, जागृति, धर्मयुग, विभिन्न साप्ताहिक विशेषांकों, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, सरस्वती परम्परा, आधार, ज्ञानोदय, माध्यम, रूपरंग आदि पत्र–पत्रिकाओं में प्रमुख जगह मिली। विभिन्न लेखों से ज्ञात होता है कि वे कला को किसी दायरे में बंधा न देखकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसका विकास करना चाहते हैं कि ताकि भारतीय कला को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्र पहचान मिल सके। अनेक पुस्तकों में उनके कला विचार देखे जा सकते हैं।

**प्रमुख पुस्तकें :**

1. रेखावली
2. शिल्पलोक
3. नवीन भारतीय चित्रकला शिक्षण पद्धति
4. चित्रकला का रसास्वादन
5. कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ
6. कला दर्शन।
7. कला प्रसंग
8. आधुनिक कला समीक्षावाद
9. आधुनिक चित्रकला
10. पश्चिमी आधुनिक चित्रकार।

अपनी पुस्तकों में कला के विभिन्न पक्षों पर विचार किया है। कला समीक्षक प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल की कला में पूर्व और पश्चिम की कला का गहन अध्ययन दिखाई पड़ता है। अमृता शेरगिल के चित्रों की रंग योजना व आकार वैचित्र्य, यामिनी राय के रंगों के सामन्जस्य व लयात्मकता से प्रभावित हुए। अरूपवादी कला (एबस्ट्रैक्ट आर्ट) से भी परिचय हुआ, पाल क्ले के विचारों से अत्यधिक सहमत थे, क्योंकि वह आधुनिक कला के मूल तत्वों को सही ढंग से विवेचित करने वाला आधुनिक चित्रकार था।

'रामचन्द्र शुक्ल उन कलाकारों में से है जो कला को खोज का विषय मानते हैं। आप विषय के चयन व शैली पर किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध स्वीकार नहीं करते और जीवन के हर पहलू व हर घटना को विषय का आधार मानते हैं..... श्री शुक्ल ने आधुनिकता के हर वाद को स्वीकार किया है उनका कहना है कि 'खोज' के लिए ''मैं हर शैली को अपना कर नयापन पाने का प्रयास करता हूँ।'' श्री शुक्ल ने प्रकृति के दृश्यों को भी अपनाया और मानव मन की प्रकृति के विभिन्न पहलुओं को भी।'[6]

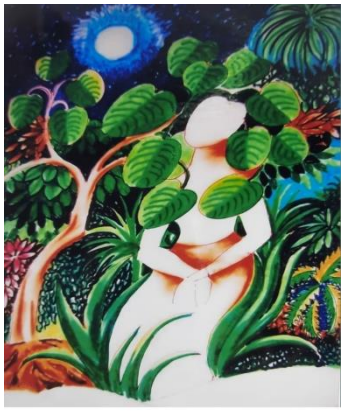

श्रावणी (स्याही व स्कैचपैन) प्रो.राम चन्द्र शुक्ल

पश्चिम का आपकी कला पर प्रभाव निसंकोच स्वीकार किया है 'जब मैंने चित्रकारिता शुरू की थी तो पश्चिम में ढल गया था, परन्तु जल्दी ही होश में आ गया। पर ऐसा सब नहीं कर पाते, फिर मैंने पूरी कोशिश की कि नकल नहीं करना है। अमूर्तन में भी जो काम किया है वो मन में जो भावना थी तरंगे थी, उसे अमूर्त में रखा। पश्चिम में अमूर्त में ढ़लने की कोशिश की गयी। वस्तु या किसी चेहरे में शेष इस तरह अमूर्त रूप दिया गया कि उसे पहचानना मुश्किल हो गया। किन्तु मैंने अपनी फीलिंग को अपने मनोभावों की तरंगों को कागज पर उतारने की कोशिश की।'[7] 1950 में अरूपवादी तथा अभिव्यंजनावादी चित्रों की एक विशाल प्रदर्शनी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रूइया छात्रावास के विशाल कक्ष में आयोजित हुई। प्रो0 शुक्ल अभिव्यक्ति के प्रयास को प्रयोगवाद का मूल आधार मानते हैं। 'उनके पास प्राचीन–अर्वाचीन, आदर्शवादी, यथार्थवादी, कल्पना प्रधान, मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक सभी प्रकार के चित्र है। साधारण कोटि से उच्च कोटि के रंगमंच चित्र उनकी कला शाला में दिखाई पड़ते हैं।'[8] आपके अनुसार इस यथार्थ जीवन में ही 'शाश्वत सत्य' अन्तर्निहित है, जिसे खोज निकालना हमारा कर्तव्य है इसके साथ एक सच्चे आधुनिक कलाकार को प्राचीन रूढ़ियों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

रामचन्द्र शुक्ल परम्परा से प्रेरणा को आश्वयक मानते हैं। 'मेरा दृष्टिकोण यह भी रहा है कि विदेशी आधुनिक कला की प्रवृत्तियों में न बहकर अपने समकालीन समाज, जीवन, आशा, आकांक्षाओं तथा अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर अपनी शैली के अनुरूप ढालूँ। यही कारण है कि मैंने पाश्चात्य आधुनिक कला की प्रवृत्तियों से अपने को मुक्त रखने का प्रयास किया है मेरा इरादा प्राचीन भारतीय शैलियों के दायरे में बंधने का कभी नहीं रहा, फिर भी उनसे प्रेरणा तो बराबर लेता रहता हूँ क्योंकि यही हमारी वर्तमान कला प्रगति की आधारशिला है, उससे कटते ही हम धराशाही हो जायेंगे।'[9]

'श्री शुक्ल की कला का सत्य दार्शनिक सत्य सा नीरस, अनुमेय चिन्त्य नहीं है बल्कि उपभोग्य तथा अनुभव है। इस दृष्टि से उनके 1965 में निर्मित टैम्परा जल–चित्रण के चित्र 'निर्वसना', 'अन्तरिक्ष का उदय', जन जीवन आदि है। इस चित्रों में इम्प्रेशनिज्म के साथ–साथ रंगों और प्रकाश में 'डिस्टार्शन' है।'[10]

'प्रो0 शुक्ल ने 'रचना संस्था की स्थापना भी की थी। यह वाराणसी के सृजनशील कलाकारों की संस्था थी, इस संस्था में नगर के तथा बाहर के प्रबुद्ध कला–प्रेमियों को आमन्त्रित किया जाता था तथा कला की भावी दिशा पर तर्कपूर्ण विचार विनिमय होता था। इस संस्था ने परम्परा और आधुनिकता को एक साथ आत्मसात करने का प्रयास किया। रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार..... 'परम्परा और आधुनिकता दो अलग–अलग इकाइयाँ नहीं है बल्कि एक ही माल के दो कड़ियां है। या कहा जाए एक ही मंजिल की दो सीढ़िया हैं।''[11]

70 के दशक में शुक्ल जी ने भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में समीक्षावाद नामक वैचारिक आन्दोलन चलाया। समीक्षावादी चित्रों में जीवन और समाज के विरोधाभासों की आलोचना और नकारात्मकता पर व्यंग ही प्रमुख ध्येय था। समीक्षावादी कलाकारों का प्रमुख दृष्टिकोण सरल, सहज, सीधी, तीक्ष्ण एवं प्रतीकात्मकत शैली तथा भाषा में शक्तिशाली ढंग से सामाजिक चेतना की अभिव्यजना करना। ऐसी कला जो सामाजिक हित, सामाजिक भावना का प्रतिनिधित्व करती हो, उसका स्वरूप आसानी से समझ में आने वाला हो।

समीक्षावाद के पश्चात् 90 के दशक में श्री ने शुक्ल लोक चित्रकला मधुबनी से प्रभावित होकर इन्टयूटिव चित्रकला की श्रृंखला को प्रारम्भ किया। इन चित्रों को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डेलीगेसी में प्रदर्शित भी किया गया।

'राम चन्द्र शुक्ल की कला की प्रमुख विशेषता यह है कि उनके किन्हीं दो चित्रों में विचारधारा शैली, विषयवस्तु या रंग का मिश्रण का साम्य नहीं दिखाई पड़ता प्रत्येक चित्र अपने में एक नयी प्रेरणा, एक नया सन्देश, नया जीवन लेकर सामने आता है, यदि यह कहा जाए कि उनके केवल एक चित्र के पूर्ण अध्ययन एवं मनन से सहज ही किसी कला के विद्यार्थी को इतनी अधिक प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिल सकता है कि वह अपना जीवन कला की साधना में अर्पित करने को तैयार हो जाएगा तो बिल्कुल अतिश्योक्ति न होगी।'[12]

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. मैं और मेरी कला', रामचन्द्र शुक्ल, भारती, जुलाई 1961, पृ0सं0 61
2. नवजीवन (साप्ताहिक विशेषांक) लखनऊ, रविवार 31 अक्टूबर, 1971
3. हिन्दी प्रचारक, मई 1954, बनारस
4. आज (साप्ताहिक विशेषांक) रविवार 18 जनवरी, 1959
5. भारतीय चित्रकला, परम्परा और आधुनिकता का अंर्तद्वन्द्व, डॉ0 एस0वी0एस0 सक्सेना, डॉ0 आनन्द लखटकिया, पृ0सं0 25
6. नवजीवन, 24 अक्टूबर 1971 (लखनऊ)
7. दैनिक जागरण, बृहस्पतिवार, 03.10.2002
8. अवन्तिका, मई मास 1953
9. आधुनिक कला–समीक्षावाद, प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल, पृ0सं0 148
10. नवजीवन, 31 अक्टूबर, 1971 (लखनऊ)
11. 'रचना' के सृजनशील कलाकारों की प्रदर्शनी के कैटलॉग से 1 फरवरी 1973
12. अमृत पत्रिका, 24 फरवरी 1952